Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 445-451 *Journal Website www.academejournal.in*

मधुकर सिंह के कथा साहित्य में वर्गीय चेतना का स्वरुप

निशा कुमारी

(शोधार्थी)

हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर दरभंगा

शोध सार :–

'वर्गीय चेतना' से तात्पर्य वर्ग संबंधि चेतना से इसमें मुख्य रूप से समाज के अस्तित्व तथा अस्मिता की रक्षा एवं वृद्धि के लिए जागृति का भाव सन्नित है। जब शोषित और वंचित वर्गो में अपने हितों एवं अधिकारों के प्रति जागरुकता आती है तो वे संगठित होकर शोषक वर्ग के खिलाफ न केवल अपनी आवाज बुलंद करते है बल्कि संघर्ष कर क्रांति का एलान करते हैं। 'वर्गीय चेतना' मार्क्स के वर्ग सिद्धांत का एक मुख्य पहलू है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के भीतर श्रमिकों और मालिकों के बीच सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक संबंधों पर केंद्रित है। कार्ल मार्क्स का मानना है कि इतिहास के प्रत्येक युग और समाज में सदैव दो विरोधी वर्ग रहा है– शोषक और शोषित वर्ग। इन्हीं दो वर्गों के बीच आपसी संघर्ष होता रहा है।

औपनिवेशिक भारत में वर्ग स्तरीकरण विश्वव्यापी है जिसमें व्यक्तियों को उनकी प्रतिष्ठा, संपत्ति और शक्ति की मात्रा के सापेक्ष पदानुक्रम के विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।जिससे उस सामाज की स्थिति के संदर्भ में सामाजिक वर्ग, जाति, जेंडर, सभ्यता और संस्कृति के आधार पर अध्ययन किया जाता है।

मधुकर सिंह मार्क्सवादी,प्रगतिवादी लेखक रहे। वे बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के थे। उन्होंने अपने निजी जीवन अनुभव को रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। अत्यंत संवेदनशील प्रकृति के होने के कारण सबल व्यक्तियों द्वारा निर्बल व्यक्तियों पर किए जाने वाले अमानवीय अत्याचार के प्रति विद्रोह की भावना उनके अंतर्मन को झकझोर देती हैं। प्रतिवादी चेतना से प्रभावित होने के कारण उनकी रचनाओं में वर्ग–व्यवस्था और वर्ग–चेतना का होना स्वाभाविक है। मधुकर सिंह प्रारंभ से ही जातिगत भेद–भाव तथा आर्थिक शोषण के कारण असहाय और निर्दोष लोगों पर दबंग जाति के अत्याचार को समझने में समर्थ रहे हैं। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण उनकी रचनाओं में वर्गीय संघर्ष का होना स्वाभाविक है।

उन्होने अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज के ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों का यथार्थ चित्रण किया है। वे समाज के शोषित, वंचित , किसान, मजदूर, दलित, स्त्री आदिवासी और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों को केंद्र में रखकर उनकी समस्याओं को दिखाने का बखूबी प्रयास किया है। मधुकर सिंह की रचनाएं वर्गीय चेतना से पूरी तरह प्रभावित है।

प्रस्तावना:–

वर्गीय चेतना सामूहिक संघर्ष से जन्मी एतिहासिक घटनाए है ,जो समाज के सभी वर्गों में अपनी पहचान, अस्मिता, और अस्तित्व को लेकर जागरुक करती है। 'वर्गीय चेतना' से तात्पर्य वर्ग संबंधि चेतना से इसमें मुख्य रूप से समाज के अस्तित्व तथा अस्मिता की रक्षा एवं वृद्धि के लिए जागृति का भाव सन्नित है।

© Copyright @ Authors

जब शोषित और वंचित वर्गों में अपने हितों एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता आती है तो वे संगठित होकर शोषक वर्ग के खिलाफ न केवल अपनी आवाज बुलंद करते है बल्कि संघर्ष कर क्रांति का एलान करते हैं।

मार्क्सवाद में वर्ग चेतना उन मान्यताओं का समूह है जो एक व्यक्ति समाज में अपने सामाजिक वर्ग या आर्थिक रैंक अपने वर्ग की संरचना और अपने वर्ग हितों के संबंध में रखता है। कार्ल मार्क्स के अनुसार यह एक जागरूकता है जो क्रांति को जन्म देती है और सर्वहारा वर्ग को तानाशाह बनती है। 'वर्गीय चेतना' मार्क्स के वर्ग सिद्धांत का एक मुख्य पहलू है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के भीतर श्रमिकों और मालिकों के बीच सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक संबंधों पर केंद्रित है। यह सिद्धांत उनके सिद्धांत के संयोजन में विकसित किया गया है ताकि किसी तरह श्रमिक पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंक सके और फिर असमानता और शोषण के बजाय समानता पर आधारित एक नई आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण हो सके। पूंजीपति वर्ग द्वारा सर्वहारा वर्ग का शोषण तभी तक चलता है जब तक श्रमिक एक वर्ग के रूप में अपनी एकता, अपनी साझा, आर्थिक और राजनीतिक हितों और अपनी संख्या में निहित शक्ति को नहीं पहचानते। परंतु जब श्रमिकों को इस कार्य की समग्रता समझ में आ जाती है तो वे एकजुट होकर वर्ग संबद्ध होकर क्रांति करते है, जो पूंजीवादी की शोषणकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंकती हैं। कार्ल मार्क्स का मानना है कि इतिहास के प्रत्येक युग और समाज में सदैव दो विरोधी वर्ग रहा है– शोषक और शोषित वर्ग। इन्हीं दो वर्गों के बीच आपसी संघर्ष होता रहा है।

हंगरी के सामाजिक सिद्धांतकार जॉर्ज लुकास जिन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांत की परंपरा का पालन करते हुए वर्गीय चेतना की अवधारणा का विस्तार किया है। उनका मानना है कि 'वर्गीय चेतना एक उपलब्धि है जो व्यक्तिगत चेतना का विरोध करती है और सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों की समग्रता को देखने के लिए सामूहिक संघर्ष का परिणाम है।'

औपनिवेशिक भारत में वर्ग स्तरीकरण विश्वव्यापी है जिसमें व्यक्तियों को उनकी प्रतिष्ठा, संपत्ति और शक्ति की मात्रा के सापेक्ष पदानुक्रम के विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। समाज में वर्ग का बंटवारा सत्ता और प्रतिष्ठा के आधार क्रमबद्ध स्वरुप किसी भी समाज का सार्वभौमिक कारण है। समाज में जब शोषक वर्ग का शोषण और अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है तब सामान लक्ष्य वाले लोगों का एक समूह बनता है जिनका लक्ष्य आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक दृष्टि से समान हो और श्रम विभाजन या न्याय के प्रति समानता का भाव रखता हो। सामाजिक वर्गीकरण की व्यवस्था प्रत्येक सामाज में विभिन्न प्रकार से कार्य करती है। जिससे उस सामाज की स्थिति के संदर्भ में सामाजिक वर्ग, जाति, जेंडर, सभ्यता और संस्कृति के आधार पर अध्ययन किया जाता है।

मधुकर सिंह मार्क्सवादी,प्रगतिवादी लेखक रहे। वे बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के थे। उन्होंने अपने निजी जीवन अनुभव को रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। अत्यंत संवेदनशील प्रकृति के होने के कारण सबल व्यक्तियों द्वारा निर्बल व्यक्तियों पर किए जाने वाले अमानवीय अत्याचार के प्रति विद्रोह की भावना उनके अंतर्मन को झकझोर देती है। स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनकारीयों एवं भारतीय समाज में हो रही अमानवीय व्यवहार शोषण और अत्याचार के भी प्रत्यक्ष द्रष्टा ही नहीं कटु आलोचक भी रहे हैं। प्रतिवादी चेतना से प्रभावित होने के कारण उनकी रचनाओं में वर्ग–व्यवस्था और वर्ग–चेतना का होना स्वाभाविक है। मधुकर सिंह प्रारंभ से ही जातिगत भेद–भाव तथा आर्थिक शोषण के कारण असहाय और निर्दोष लोगों पर दबंग जाति के अत्याचार को समझने में समर्थ रहे हैं। मधुकर सिंह मार्क्सवादी प्रगतिवादी तथा समाजवादी दृष्टिकोण के आलोक में वर्गीय

© Copyright @ Authors

चेतना पर आधारित कई रचनाएं की है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में पात्रों के माध्यम से वर्गीय चेतना के विविध रुप का सजीव चित्रण किया है।

मधुकर सिंह परिवर्तन तथा वर्ग–संघर्ष के लिए आंदोलन को अनिवार्य मानते हैं। उनका मानना है कि– आंदोलन ही सर्वहारा वर्ग का एकमात्र अस्त्र है, जिससे शोषण और अत्याचार को काटा जा सकता है। लेखक आंदोलन के लिए संगठन को अत्यावश्यक मानते हैं। उनकी रचनाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संगठनों के निर्माण एवं आंदोलन को सक्रियता प्रदान करने में सफल रहे हैं तथा परिवर्तन के लिए हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठे रहने वाले व्यक्ति नहीं है बल्कि क्रांति का आवाहन कर समाज में बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। उन्होने अपने कथा साहित्य में भारतीय समाज के ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों का यथार्थ चित्रण किया है। वे समाज के शोषित, वंचित , किसान, मजदूर, दलित, स्त्री आदिवासी और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों को केंद्र में रखकर उनकी समस्याओं को दिखाने का बखूबी प्रयास किया है। मधुकर सिंह की रचनाएं वर्गीय चेतना से पूरी तरह प्रभावित हैं। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण उनकी रचनाओं में वर्गीय संघर्ष का होना स्वाभाविक है। वर्ग– संघर्ष मार्क्सवादी विचार है। इस सिद्धांत के अनुसार वर्ग के मुख्य रुप से तीन स्तरों से विभाजित किया गया है –**उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, एवं निम्न वर्ग।**

प्रायः इन वर्गों के बीच परस्पर आपसी संघर्ष चलता रहा। इस संघर्षों के बीच वर्गीय चेतना के विभिन्न स्वरुप वर्ग संबद्धता और पहचान, वर्ग विरोध, वर्ग समग्रता आदि समाज की संपूर्णता को समाहित करके एक वर्गविहीन समाज की स्थापना करते हैं। उनके कथा साहित्य में समाज के कई वर्ग आपस में एकजुट होकर अपने से उच्च वर्ग के खिलाफ संघर्ष करते हैं और वे अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं। इतिहास से लेकर साहित्य के सभी विद्या में वर्गीय चेतना के विविध रूप का चित्रण किया गया है। स्वतंत्रता पूर्व या बाद के साहित्य में भी इस तरह कई घटनाओं का उल्लेख किया गया। वर्गीय चेतना के अंतर्गत समाज के शोषितऔर उत्पीड़ित वर्ग जैसे दलित, मजदूर, श्रमिक, आदिवासी, किसान, स्त्री आदि कई ऐसे वर्ग है जिन्होंने एकजुट होकर पूंजीपति, जमींदार और उच्च वर्ग के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते हैं।

उच्च वर्ग:– उच्च वर्ग के अंतर्गत पूंजिपति, सामंत, जमींदार, सत्ता तथा शक्ति से संपन्न लोग आते हैं, जिनका उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण होता है। उच्च वर्ग के लोग धूर्त, कामी, शोषक, अत्याचारी और हिंसक भेड़ियों से भी बर्बर होते हैं। जो अपने से निम्न जाति के लोगों को शोषण का शिकार बनाते हैं। यह वर्ग आर्थिक रूप से समृद्ध और शक्ति संपन्न होने के कारण निम्न वर्ग के लोग का शोषण करना अपना अधिकार समझते हैं। समाज में इन लोगों की संख्या बहुत कम है परंतु साधन संपन्न होने के कारण धन की प्राप्ति के लिए अन्य वर्ग का शोषण करते है। यह वर्ग अपने लाभ के कारण किसी भी हद तक जा सकते हैं इसके लिए वह मानवीय मूल्यों की हत्या करने से भी नहीं कतराते। उत्पादन के साधनों पर इनका पूरा अधिकार होता है। यह वर्ग हाथी के दांत की तरह होते हैं खाने के अलग और दिखाने के अलग। उच्च वर्ग के लोग बाहरी दिखावा करके निम्नवर्ग पर सहानुभूति प्रकट करते हैं किंतु अंदर से वे हिंचक भेड़ियों के समान है जो मौका पाकर गरीब की जमीन धन– संपत्ति, घर और उनकी बहू–बेटीयों की इज्जत का डाका डालते हैं। उच्च वर्ग में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो साधन संपन्न होकर जनता के हित में कार्य करते हैं। वे मार्क्स और अंबेडकर की विचारों से प्रभावित होकर समाज में शोषण और अत्याचार के विरुद्ध उठ खड़े होते हैं और जनता के लिए संघर्ष करने को तैयार रहते हैं। ऐसे लोग उच्च जाति में जन्म लेने के

© Copyright @ Authors

बाद भी छोटी जाति के लोगों से सहानुभूति रखते हैं और उनकी पीड़ा दुःख–दर्द को अपना दर्द समझकर उसे दूर करने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं।

मधुकर सिंह की 'पहली मुक्ति' कहानी में रघुनी की संघर्ष गाथा ही नहीं उसकी मुक्ति गाथा भी है। कहानी में गजानन बाबू उसके पिता बेनीमाधो बाबू, छोटा भाई देवनबाबू सभी एक ही धूर्तता और काम–भोग की मिट्टी के बने हैं। इसके शोषण अत्याचार दिन– प्रतिदिन बढ़ता ही जाता जा रहा था। रघुनी बेनीमाधो का बंधुआ मजदूर है, जो निम्न जाति का है। उसके पिता बेनीमाधो के बंधुआ मजदूर थे। एक दिन बेनीमाधो रघुनी के सामने रघुनी की फुआ को खेत पर पटक दिया। जिससे वह गुस्से से लाल हो गया। परंतु वह कुछ नहीं कर सका। निम्न वर्ग के लोगों को हमेशा ही उच्च वर्ग के शोषण का शिकार होना पड़ता है। बेनीमाधो बाबू के दो लड़के हैं– गजानन और देवानन। देवानन की मृत्यु के बाद गजानन छोटी भाई के विधवा पत्नी का शारीरिक शोषण करता है। इसका उल्लेख करते हुए लेखक लिखते हैं– "जिस दिन देवानन के बड़े भैया को भौजी का हाथ पकड़कर पलंग पर लाते देख लिया था उसी दिन से भौजी उसे और भी ज्यादा बेचैन करनी लगी थी। थोड़ी देर के लिए रघुनी को काठ मार गया।"[1] भौजी को यह सब बिल्कुल पसंद नहीं है और न ही उसे बर्दाश्त होता है। वह रघुनी को अपना बैठी है। और उसे अपनी मुक्ति की बात करती है वह कहती है – "मुझे इस नरक से कहीं भी ले चल! मैं तेरे साथ जिंदगी गुजार लूंगी।"[2] रघुनी संघर्ष के रास्ते स्वयं और भौजी को मुक्त करके ही दम लेता है। मधुकर सिंह शोषण, दमन और उत्पीड़न के स्तर पर स्त्री को भी दलित, शोषित और उत्पीड़ित ही समझते हैं।

उच्च वर्ग के लोग अपने स्वार्थ के लिए बड़ी चालाकी से निम्न वर्ग के लोगों का अपनी धूर्त जाल में फंसाकर मार डालते हैं। 'भाई का जख्म' कहानी में निम्न वर्ग के लोग अपने स्वार्थ के लिए जन्म–जन्मांतर के दुश्मन उच्च वर्ग के खेमे में जा पहुंचते हैं! 'अगुन कापड़' का खलपात्र वकील भी ऐसा ही उच्च वर्ग का एक क्रूर व्यक्ति है। वह देवकी मंडल के खेत से अपने खेत में सींचने के लिए जबरन पानी ले जाना चाहता है। देवकी के विरोध करने पर उसके पेट में भाला घुसेड़ कर उसको मार डालता है और उसकी हत्या का आरोप बंधुआ मजदूर अगुन कापड़ पर लगा देता है। उच्च वर्ग स्वार्थ लोलुप होते है। वे अपनी स्वार्थलोलुपता में किसी भी हद तक नीचे गिर सकता है। उसके लिए मारपीट, षड्यंत्र, बलात्कार, हत्या कुछ भी वर्जनीय है।

मध्यम वर्ग:– मध्यम वर्ग उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच का वर्ग है। संख्या की दृष्टि से यह समाज में सबसे बड़ी संख्या में निहित होता है। यह दो वर्गों में विभाजित होता है– उच्च मध्यवर्ग और निम्न मध्यमवर्ग। उच्च मध्यम वर्ग जो निम्न वर्ग से अधिक प्रभावित रहता है और उसी प्रकार का जीवन जीने की इच्छा रखता है। उच्च वर्ग की भोगवादिता,विलासपूर्ण जीवन के प्रभाव से यह वर्ग अधिक ग्रस्त होता है। मध्य वर्ग में अलगाव, कुंठा, निराशा, अशांत दांपत्य जीवन, प्रेम समस्या तथा अनैतिक यौन संबंध आदि समस्याएं दिखाई देती है। निम्न मध्यमवर्ग विचारों और आदर्श में क्रांतिकारी होते हैं।यह वर्ग तथाकथित रुढ़ि– परंपराओं, मर्यादाओं का पालन करके घुटन में जीवनयापन करते रहते हैं। इस वर्ग में बुद्धिजीवी सफेदपोशी, वेतनभोगी, छोटे-छोटे उद्योगपति तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्गीय कर्मचारी, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, अध्यापक, व्याख्याता, लिपिक, पत्रकार, तथा समाचार पत्रों के संपादक, लेखक, कवि, किसान, पुलिस तथा प्रशासनिक अधिकारी आदि लोग आते हैं। इस वर्ग में अगर कोई व्यक्ति आय की दृष्टि से मध्यम वर्ग में है और जाति की दृष्टि से उच्च जाति का है तो उसका व्यवहार मध्यवर्गीय न होकर उच्च वर्ग के जैसा ही होता है। वे अपने से छोटी जाति के लोगों पर अत्याचार करते हैं। उनका व्यवहार उच्च वर्ग के सामंतों जैसी क्रूरतापूर्ण व हिंसक होते हैं। मध्यवर्गीय में कुछ लोग ऐसे हैं जो

© Copyright @ Authors

प्रतिक्रियावादी ताकतों से लोहा लेते हैं और सर्वहारा या निम्न वर्ग के साथ पूरी प्रतिबद्धता के साथ खड़े दिखाई देते हैं। ये लोग समाज में हो रहे थे अत्याचारों के खिलाफ खड़ा होकर निम्न वर्ग में चेतना जागृत करते हैं और उच्च वर्ग के विरोध में विद्रोह करके संघर्ष करने के लिए जागरुक करते हैं।

'सबसे बड़ा छल' उपन्यास में देवनाथ और बुटाई सिंह ऐसे पात्र हैं जो लोगों के हक की बात करते हैं। वे समाज में व्याप्त शोषण और अत्याचारों के खिलाफ विरोध करता है और लोगों को भी उसके खिलाफ संघ बनाकर जागरूक करता है। वह समाज में समानता का हिमायती है। लेखक ने इन दोनों पात्रों के द्वारा समाज में चेतना जागृत करने का सफल प्रयास किया है जिससे लोग जमीनी स्तर से अपने हक के लिए लड़ाई लड़ सके। लेखक इस पात्रों के माध्यम से भारतीय समाज में शोषण और अत्याचार को मिटाकर समरसतावाद की स्थापना करने का प्रयास करते हैं।

'तक्षक' कहानी के नायक बी.के. का पिता बंदूक रायफल की दुकान का मालिक है। वह मध्यवर्गीय है, किंतु अपने पुत्र बी.के. व उसके परिवार के प्रति उसका व्यवहार अत्यंत क्रूर और उच्च वर्गीय सामंती चेतना से परिपूर्ण है। कॉलेज व विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर कहने को तो मध्य वर्ग में आते हैं किंतु उनमें जो ऊंची जाति के होते हैं, उनकी चेतना उच्च वर्ग के सामंत जैसी क्रुरतापूर्ण और हिंसक होती है।

'पहला पाठ' मधुकर सिंह की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी का मुख्य पात्र मास्टर रामरतन है, जो सामंती चेतना के विरुद्ध सीना तान का खड़ा रहता है। वह गरीब, पिछड़े, दलितों बस्ती के बच्चों के लिए शिक्षा का द्वार खोलकर उसमें भोर और उजाला की ललक पैदा करता है।

'कथा कहो कुंती माई' उपन्यास में मध्यम वर्ग के संघर्ष दिखाया गया है। और साथ ही उससे मुक्ति को भी दिखाने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास का एक पात्र जगदीश है जो हाईस्कूल में पढ़ाता है। जगदीश भोजपुर गांव के मुखिया पद पर रामनरेश राम की खुली मदद के लिए औरंगाबाद से आए थे। गांव के सामंत जगदीश मास्टर की निर्भीकता से चिढ़े हुए हैं। क्योंकि वे गांव में शोषक वर्ग के खिलाफ लोगों को जागरूक करते हैं।

निम्न वर्गः– निम्न वर्ग का स्थान समाज के सबसे निचले पायदान पर होता है। निम्न वर्ग के जीविका उत्पादन का प्रमुख साधन शारीरिक श्रम है। ये लोग प्रत्यक्ष श्रम करके पसीना बहाकर मजदूरी करके अपनी जीविका चलाते हैं। वे अपनी रोजी–रोटी तथा सामान्य आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। यह वर्ग शिक्षा, अंधविश्वास और अनीति से ग्रस्त होने पर भी अपने अधिकारों और कर्तव्य के प्रति सजग दिखाई नहीं देते। आर्थिक अभाव के कारण इनका जीवनद दर–दर की ठोकर खाने के लिए मजबूर होता है। इस वर्ग का शोषण उच्च वर्ग या मध्यम वर्ग दोनों मिलकर करते हैं। यह वर्ग उनके हाथों की कठपुतली बना रहता है। इस वर्ग के अंतर्गत कारखाने या मिलो में काम करने वाले मजदूर, खेतों में काम करने वाले मजदूर, निम्न जाति में जन्म दलित, स्त्री ,आदिवासी या अल्पसंख्यक आदि सभी लोग आते हैं। समाज के उच्च वर्ग अपने स्वार्थपरता है के कारण इन्हें रौंदते रहते हैं। समाज में निम्न वर्ग को सदैव ही शोषण का शिकार होना पड़ा।वर्ग व्यवस्था में निम्न वर्ग सदा ही शोषित और उत्पीड़ित होते रहे हैं। चाहे वह जाति धर्म कर्म के आधार पर क्यों न हो उनका शोषण किया गया है। ब्राह्मणवादी समाज में दलितों को हीन दृष्टि से देखते हैं जिससे उनमें हीनताबोध की भावना उत्पन्न हो जाती है और वह अपने को निम्न जाति का समझने लगते हैं। आज के आधुनिक युग में भी इस तरह की भावना देखी जाती है। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो निम्न जाति से छुआछूत की भावना रखते हैं पर आज जाति व्यवस्था का महत्व नहीं है

© Copyright @ Authors

लेकिन अर्थ के प्रभाव के कारण समाज का निम्न वर्ग गरीब होता चला जा रहा है वर्तमान समय में निम्न वर्ग में कुछ बदलाव दिखाई देता है। यह पहले की अपेक्षा उच्च शिक्षा को प्राप्त कर अपने अधिकार को समझने लगे हैं। जिससे वे अपने ऊपर हो रहे शोषण और अत्याचार के खिलाफ विरोध करते हैं। वे उच्च वर्ग के बढ़ते शोषण से तंग होकर उनके खिलाफ विद्रोह करते हुए दिखाई देते हैं। वर्तमान समय में उससे अच्छा प्राप्त होने से निम्न वर्ग में नयी चेतना का संचार होने लगा है। वे अपने अस्तित्व और पहचान को कायम रखने के लिए उच्च वर्ग के खिलाफ संघर्ष करते हुए वह आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। निम्न वर्गीय चेतना के कारण उनमें के जागृति आई है बल्कि स्थिति में भी सुधार हुआ है वे एकजुट संगठनात्मक रुप से एकजुट होकर शोषण और अत्याचार के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करके वर्ग के अन्य लोगों को भी जागरूक करके उनमें चेतना जागृत करते हैं ताकि लोग अपनी लड़ाई खुद लड़ सके और अपने अधिकार को समझ सके। निम्न वर्ग हमेशा से संघर्षशील रहा है। यह समाज की रुढ़िवादी परंपराओं, शोषण, अत्याचार, अंधविश्वास के खिलाफ संघर्ष करके समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते हैं। जाति भेद और वर्ग भेद की समस्या को मतकर विश्व बंधुत्व की भावना रखते हैं।

'माटी कहे कुम्हार से' कहानी का फिकिर राम दुसाध जाति का एक सदस्य है। निम्न वर्गीय चेतना से वह पूरी तरह भरा हुआ है। वह एक कवि है। उसके पास लोग बैठकर घंटों कविता सुनते हैं। वे अपनी कविता के द्वारा जनता में चेतना जागृत करते हैं। जगपत बाबा उच्च जाति की सामंती प्रवृत्ति का व्यक्ति फिकिर राम का अपमान करता रहता है। फकीर राम डरने वाला व्यक्ति नहीं है वह कहता है– "आखिर जगपत जी अपने को समझते क्या है? ऐसे अपमानित करने का नतीजा बहुत बुरा होगा।"[3] फिकिर राम पिछले तीन-चार दिनों से जगपत बाबा का हल जोतने नहीं गया। जगत बाबा द्वार पर आकर उसे भला–बुरा कहने लगता है। इससे वह कहता है– "मुझे आपकी हलवाही नहीं होगी। मैं मर जाता तो आप क्या करते हैं। इस पर जगपत कहते है– "तुम्हारी मेहरारु से हल चलाता और क्या करता है।"[4] जगपत के मुंह से ऐसी बात सुनकर फिकिर राम का चेहरा लाल हो जाता है। वह तुरंत जगपत को वहां से जाने की बात करता है और कहता है कि– "यही पटक कर जीभ खींच लूंगा। जब आपकी मेहरारु मेरी बहन लगती है। तब मेरी मेहरारु आपकी बहन क्यों नहीं लगती।"[5]

'हरिजन सेवक' शीर्षक कहानी निम्न वर्ग लोगों की हृदय विदारक कहानी है। गांव के लोगों को मजदूरी नहीं दी जाती है। उनकी बस्ती में आग लगा दी जाती है। और उन पर पुलिसिया जुल्म उठाया जाता है और उन्हें नक्सली घोषित कर जेल में ठूंस दिया जाता है। 'लहू पुकारे आदमी' कहानी में भी दलित चेतना की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है।

'बाजत अनहद ढ़ोल' शीर्षक उपन्यास तो आदिवासी चेतना के रूप में निम्न वर्गीय चेतना की अत्यंत कारुणिक महागाथा ही है। पूरे उपन्यास में आदिवासी ब्रिटिश सरकार, सामंत, और पुलिसिया जुल्म–जबरन के खिलाफ संघर्ष में लहूलुहान दिखाई देते हैं। उपन्यास में महेश दरोगा ने गोको नायक पर चोरी का इल्जाम लगाकर गिरफ्तार कर लिया। मामला लंबित नहीं हो सका। कोर्ट ने गोको नायक को बड़ी कर दिया। किंतु आदिवासीयों को इस घटना से काफी चोट लगी। आदिवासियों ने मिलकर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आवाज उठाई। "आदिवासियों की इस घटना से आहत होकर आकार लेना शुरु कर दिया। तमाम संथाल, कुम्हार तेली, लुहार, जुलाहा डोम, चमारों ने इस घटना को आदिवासी अस्मिता का सवाल बना दिया।"[6] अंग्रेज अधिकारी द्वारा जब एक लड़की का रेप किया जाता है, तो इससे आदिवासियों के बीच खलबली मच जाती है। इसके जवाब में जोवा ने पीटन साहब की हत्या कर दी। इस संबंध में लेखक लिखते हैं– "संभवत आदिवासी इतिहास की वह पहली

© Copyright @ Authors

घटना होगी जब किसी स्त्री ने अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं की थी, और उसकी सराहना युवकों की टोली ने की थी। जोवा उस आततायी की गर्दन में मुर्गी काटने वाली छुरी घुसेड़ दी थी।"[7]

निम्न वर्गीय चेतना के कारण न केवल जागृति आई है बल्कि स्थिति में भी सुधार हुआ है। यह सब वर्गीय चेतना का ही देन है जिससे लोगों में क्रांति पैदा करती है। वर्गीय चेतना जागृत होने से लोग अपने अधिकार को समझने लगे हैं। खेत में काम करने वाले मजदूर, गरीब, किसान, दलित, स्त्री,आदिवासी सभी खुली हवा में सांस ले रहे है और अपने खिलाफ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए आगे बढ़ते हैं। अब खेत में काम करते या घास गढ़ते समय सामंत पुत्रों का भय हमारी बहू–बेटियों को नहीं सताता है। वह आंख उठाकर ताकने वालों की हंसुआ से आंख काटने की हिम्मत रखती है।

इस इस प्रकार मधुकर सिंह के कहानियों या उपन्यासों में वर्गीय चेतना का आशाजनक एवं आश्वस्दायक चित्रण हुआ है। उनके अधिकांशतः सभी रचनाओं में वर्ग–व्यवस्था और वर्गीय–चेतना का स्वरूप देखने को मिलता है। इनकी रचनाओं में वर्गीय चेतना के स्वर मुखरित होता है। उन्होंने अपनी अपने कथा साहित्य के माध्यम से उच्च वर्ग, शोषक वर्ग,पूंजीपति और सामंतवादी घेरे को तोड़कर नया आदर्श स्थापित किया है। समाज में वर्ग–भेद को मिटाकर साम्यवाद की स्थापना करते हैं।

इस प्रकार समाज का वर्गीकरण इन तीन वर्गों में में विभाजित करना अंतिम रुप नहीं है। इसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से निरंतर बदलाव होते रहे हैं। इसलिए प्रत्येक वर्ग में उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग होता है। इसी कारण समाज का अंतिम विभाजन देना संभव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची : –

1. 'पहली मुक्ति', मधुकर सिंह, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली,(2013), पृष्ठ संख्या -10
2. वही, पृ. 10
3. कालचक्र, मधुकर सिंह, आचार्य प्रकाशन, इलाहाबाद, (2014), पृ. 11
4. वही, पृ. 13
5. वही, पृ. 13
6. बाजत अनहद ढ़ोल, मधुकर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,(2005), पृ. 13
7. वही, पृ. 14

© Copyright @ Authors